सुबह-सुबह क्या हुआ?

एक लड़का था जिसका नाम था सैंडी.

एक दिन सैंडी की माँ ने उसे सुबह-सुबह बिस्तर से उठाया.

मां ने सैंडी से कहा, "सैंडी, उठो और मकई की बोरी को चक्की पर पिसवाने के लिए लेकर जाओ."

फिर सैंडी अपने बिस्तर से उठा. उसने अपने कंधे पर मकई की बोरी रखी. फिर वो चक्की की ओर चला.

वो खेतों से गुज़रा और पहाड़ी पर चढ़ा,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर उतरा,
जहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया यही आवाज़ करता था.

कुछ देर बाद सैंडी को एक शिकारी मिला जो हॉर्न नाम के वाद्ययंत्र में चाभी भर रहा था.
"तुम कहां जा रहे हो, सैंडी?" शिकारी ने पूछा.
सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."
"मुझे भी उसी रास्ते जाना है, सैंडी," शिकारी ने कहा. फिर दोनों साथ-साथ चले.

सैंडी के कंधे पर मकई की बोरी थी,
और शिकारी अपने हॉर्न में चाभी भर रहा था,
वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,
वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया
यही आवाज़ करता था.

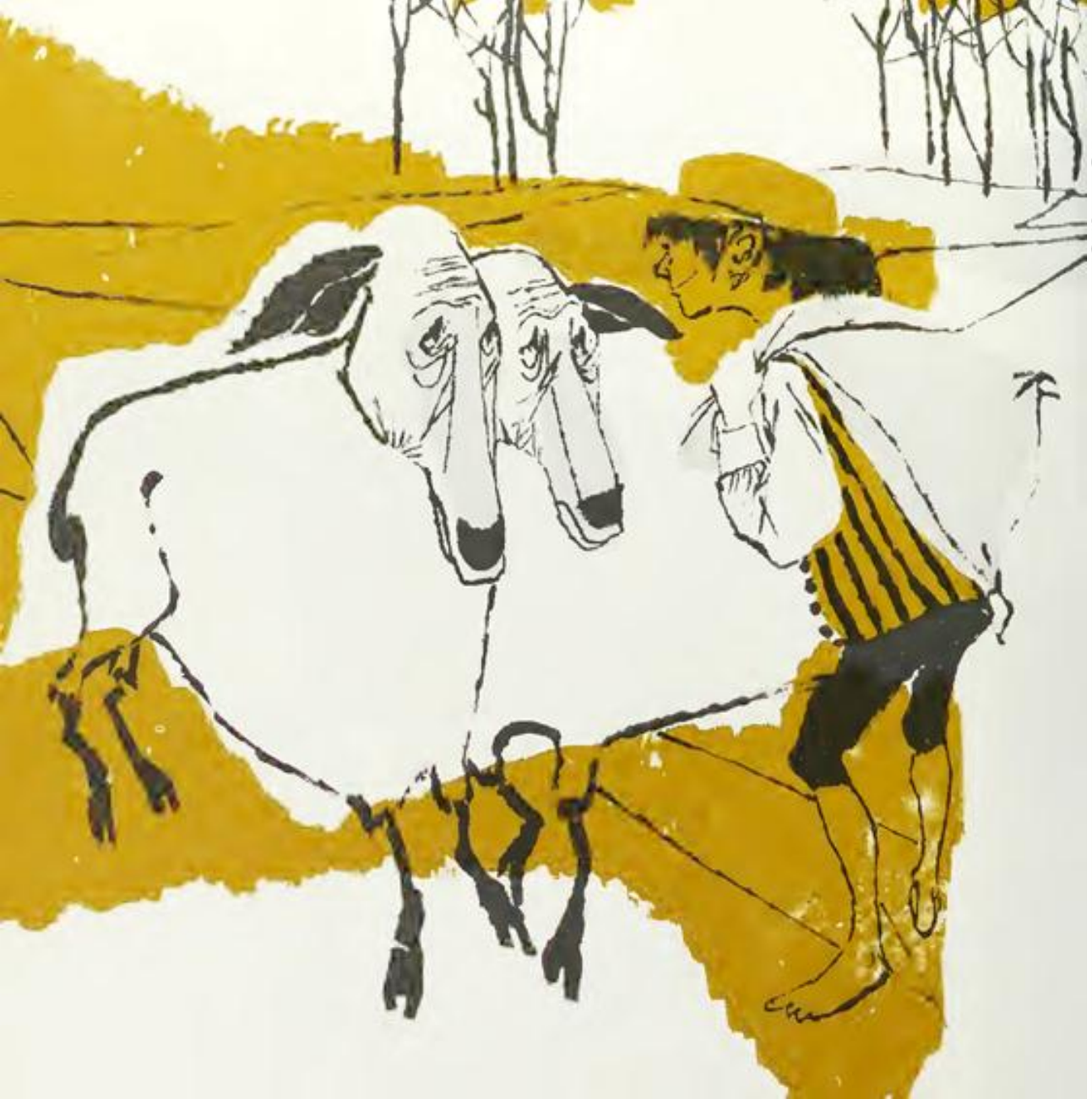

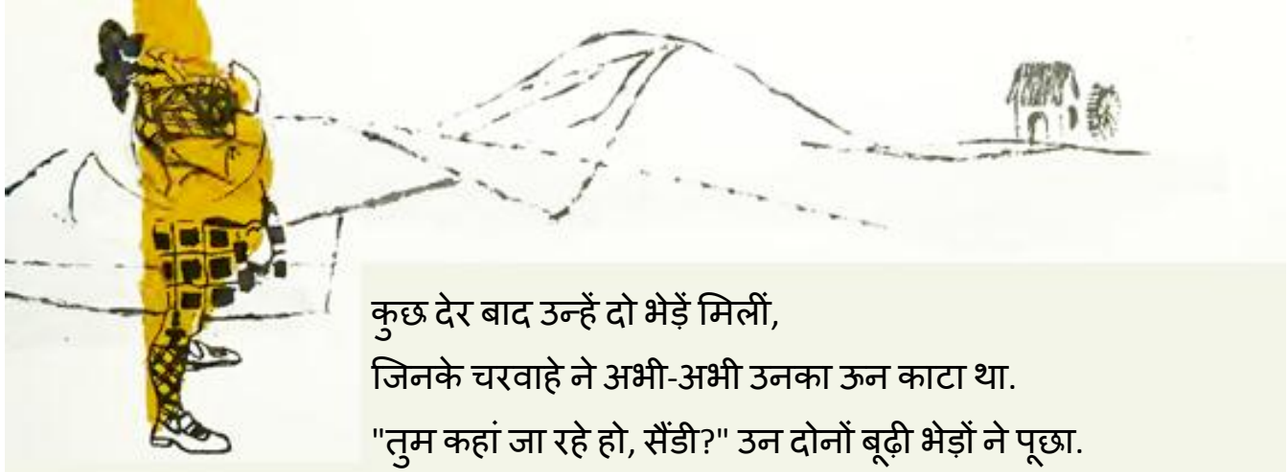

कुछ देर बाद उन्हें दो भेड़ें मिलीं,
जिनके चरवाहे ने अभी-अभी उनका ऊन काटा था.
"तुम कहां जा रहे हो, सैंडी?" उन दोनों बूढ़ी भेड़ों ने पूछा.
मैं चक्की तक जा रहा हूँ," सैंडी ने कहा.
"हम भी उसी रास्ते जा रहे हैं, सैंडी," दोनों बूढ़ी भेड़ों ने कहा.
इसलिए वे भी साथ-साथ चलीं.

सैंडी मकई की बोरी के साथ,
शिकारी अपने हॉर्न के साथ,
चरवाहा, अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,
वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,
वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया यही आवाज़ करता था.

कुछ देर बाद वो तीन जिप्सियों से मिले
जो शिकार के लिए फंदा तैयार कर रहे थे.
"तुम कहाँ जा रहे हो, सैंडी?" जिप्सियों ने पूछा.
सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."
"हमें भी उसी रास्ते ही जाना है, सैंडी," जिप्सियों ने कहा.
फिर वो भी साथ हो लिए.

सैंडी मकई की बोरी के साथ,
शिकारी अपने हॉर्न के साथ ,
चरवाहा अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,
जिप्सी अपने शिकारी फंदों के साथ.
वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,
वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया यही आवाज़ करता था.

फिर उनकी मुलाक़ात चार किसानों से हुई जो मेले में जा रहे थे.

"तुम कहाँ जा रहे हो, सैंडी?" किसानों ने पूछा.

सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."

"हमें भी उसी रास्ते जाना हैं, सैंडी," किसानों ने कहा.

फिर किसान भी उनके साथ-साथ चल दिए.

सैंडी मकई की बोरी के साथ,

शिकारी अपने हॉर्न के साथ ,

चरवाहा अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,

जिप्सी अपने शिकारी फंदों के साथ,

चारों किसान मेले की ओर चले.

वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,

वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,

वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,

चक, चक, चक, चक..... !

सुबह-सुबह चक्की का पहिया

यही आवाज़ करता था.

कुछ देर बाद उन्हें पाँच छोटे लड़के मिले जो आपस में खेल रहे थे.
"तुम कहाँ जा रहे हो, सैंडी?" लड़कों ने पूछा.
सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."
"हमें भी उसी रास्ते जाना है, सैंडी," लड़कों ने कहा.
फिर पाँचों लड़के भी उनके साथ हो लिए.

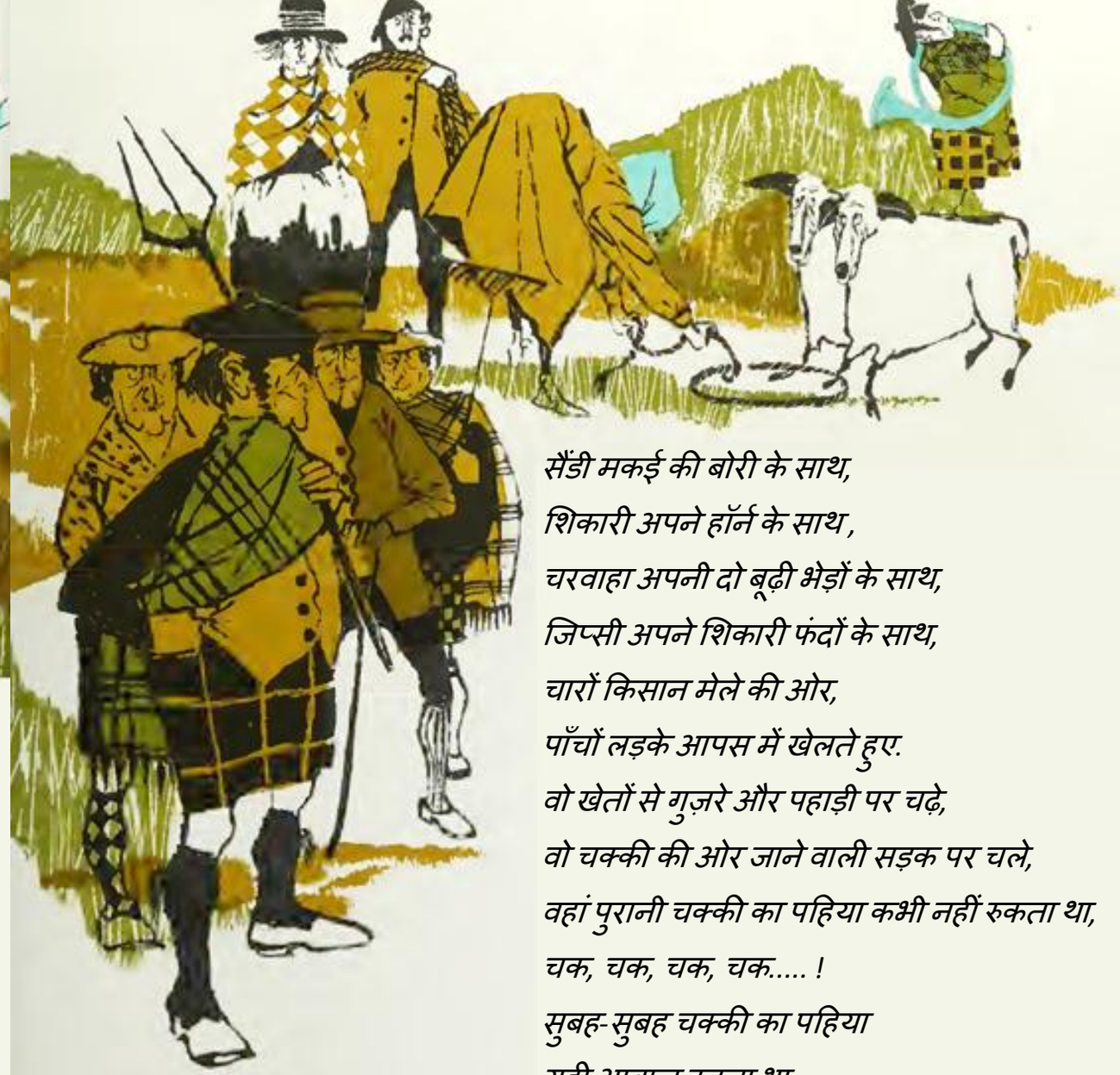

सैंडी मकई की बोरी के साथ,
शिकारी अपने हॉर्न के साथ ,
चरवाहा अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,
जिप्सी अपने शिकारी फंदों के साथ,
चारों किसान मेले की ओर,
पाँचों लड़के आपस में खेलते हुए.
वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,
वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया
यही आवाज़ करता था.

कुछ देर बाद उन्हें छह खरगोश दिखे जो हरी घास में कूद रहे थे.
"तुम कहाँ जा रहे हो, सैंडी?" खरगोशों ने पूछा.
सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."
"हमें भी उसी रास्ते जाना है, सैंडी," खरगोशों ने कहा.
फिर खरगोश भी उस कारवां में जुड़ गए.

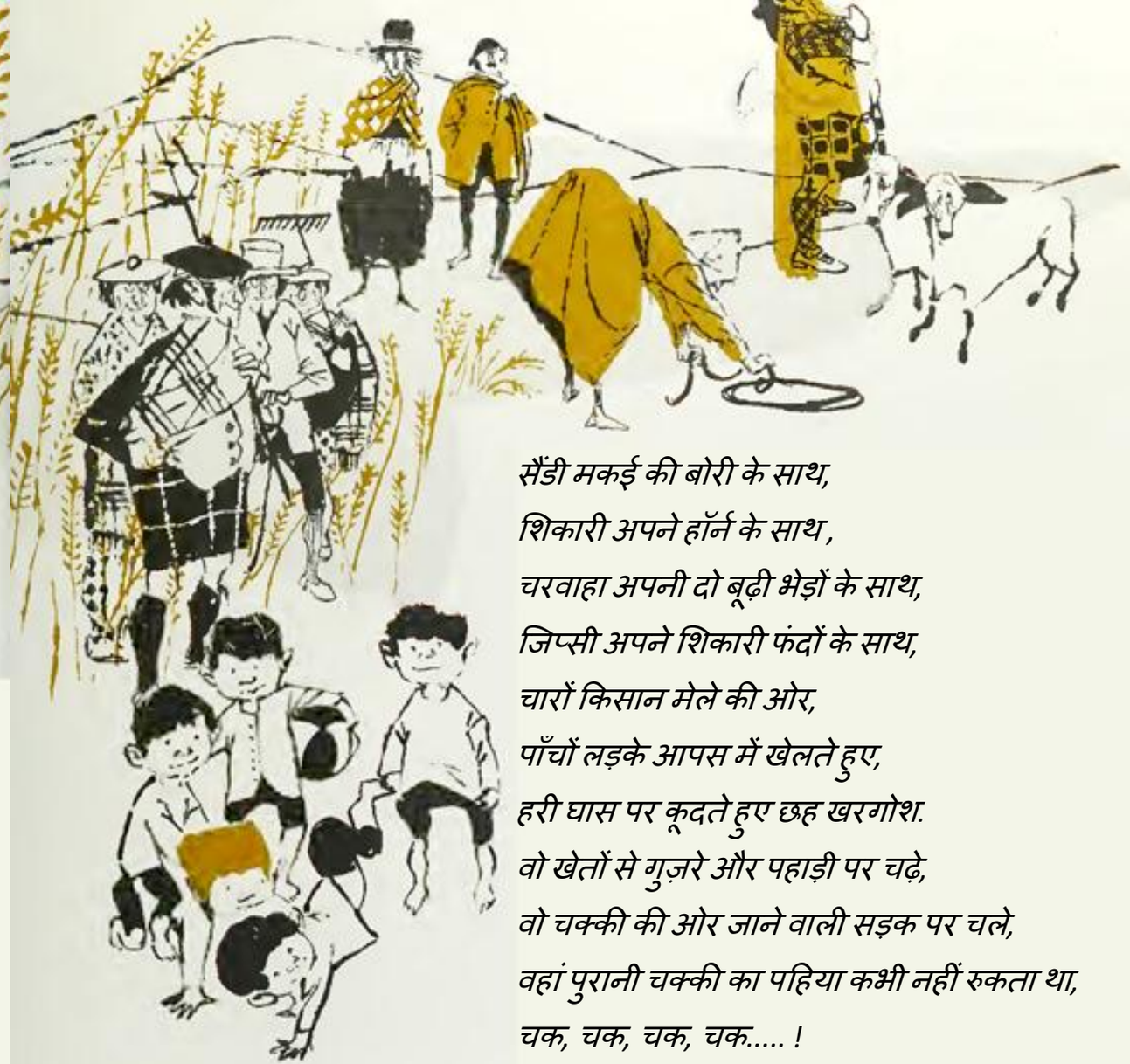

सैंडी मकई की बोरी के साथ,
शिकारी अपने हॉर्न के साथ ,
चरवाहा अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,
जिप्सी अपने शिकारी फंदों के साथ,
चारों किसान मेले की ओर,
पाँचों लड़के आपस में खेलते हुए,
हरी घास पर कूदते हुए छह खरगोश.
वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,
वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया यही आवाज़ करता था.

कुछ देर बाद उन्हें सात मोटी बत्तखें मिलीं.

"तुम कहाँ जा रहे हो, सैंडी?" बत्तखों ने पूछा.

सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."

"हमें भी उसी रास्ते जाना है, सैंडी," बत्तखों ने कहा.

फिर बत्तखें भी उनके साथ चल दीं.

सैंडी मकई की बोरी के साथ,

शिकारी अपने हॉर्न के साथ ,

चरवाहा अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,

जिप्सी अपने शिकारी फंदों के साथ,

चारों किसान मेले की ओर,

पाँचों लड़के आपस में खेलते हुए,

हरी घास पर कूदते हुए छह खरगोश,

साथ में सात मोती बत्तखें.

वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,

वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,

वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,

चक, चक, चक, चक..... !

सुबह-सुबह चक्की का पहिया यही आवाज़ करता था.

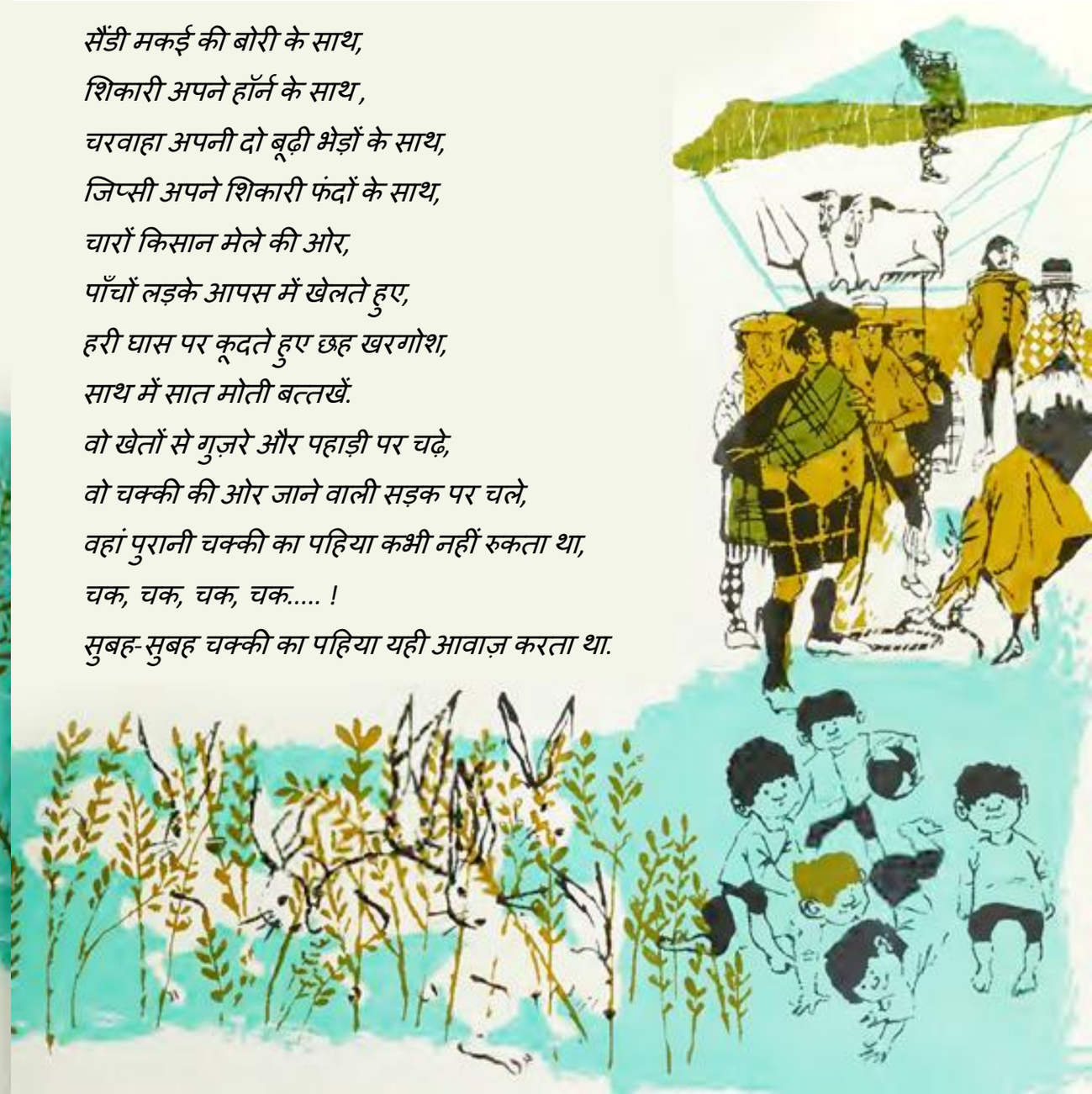

कुछ देर बाद वो आठ भूरी मधुमक्खियों से मिले.
"तुम कहाँ जा रहे हो, सैंडी?" मधुमक्खियों के झुण्ड ने सैंडी से पूछा.
सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."
"हमें भी उसी रास्ते से जाना है, सैंडी," मधुमक्खियों ने कहा.
फिर मधुमक्खियां भी उस कारवां में जुड़ गईं.

सैंडी मकई की बोरी के साथ,
शिकारी अपने हॉर्न के साथ,
चरवाहा अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,
जिप्सी अपने शिकारी फंदों के साथ,
चारों किसान मेले की ओर,
पाँचों लड़के आपस में खेलते हुए,
हरी घास पर कूदते हुए छह खरगोश,
साथ में सात मोटी बत्तखें,
और आठ भूरी मधुमक्खियां.
वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,
वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया यही आवाज़ करता था.

कुछ समय बाद उन्हें नौ लार्क चिड़िए मिलीं.
"तुम कहाँ जा रहे हो, सैंडी?" लार्क चिड़ियों ने पूछा.
सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."
"हम भी उसी रास्ते जा रहे है, सैंडी," लार्क चिड़ियों ने कहा.
फिर उन्होंने भी साथ-साथ अपनी यात्रा शुरू की.

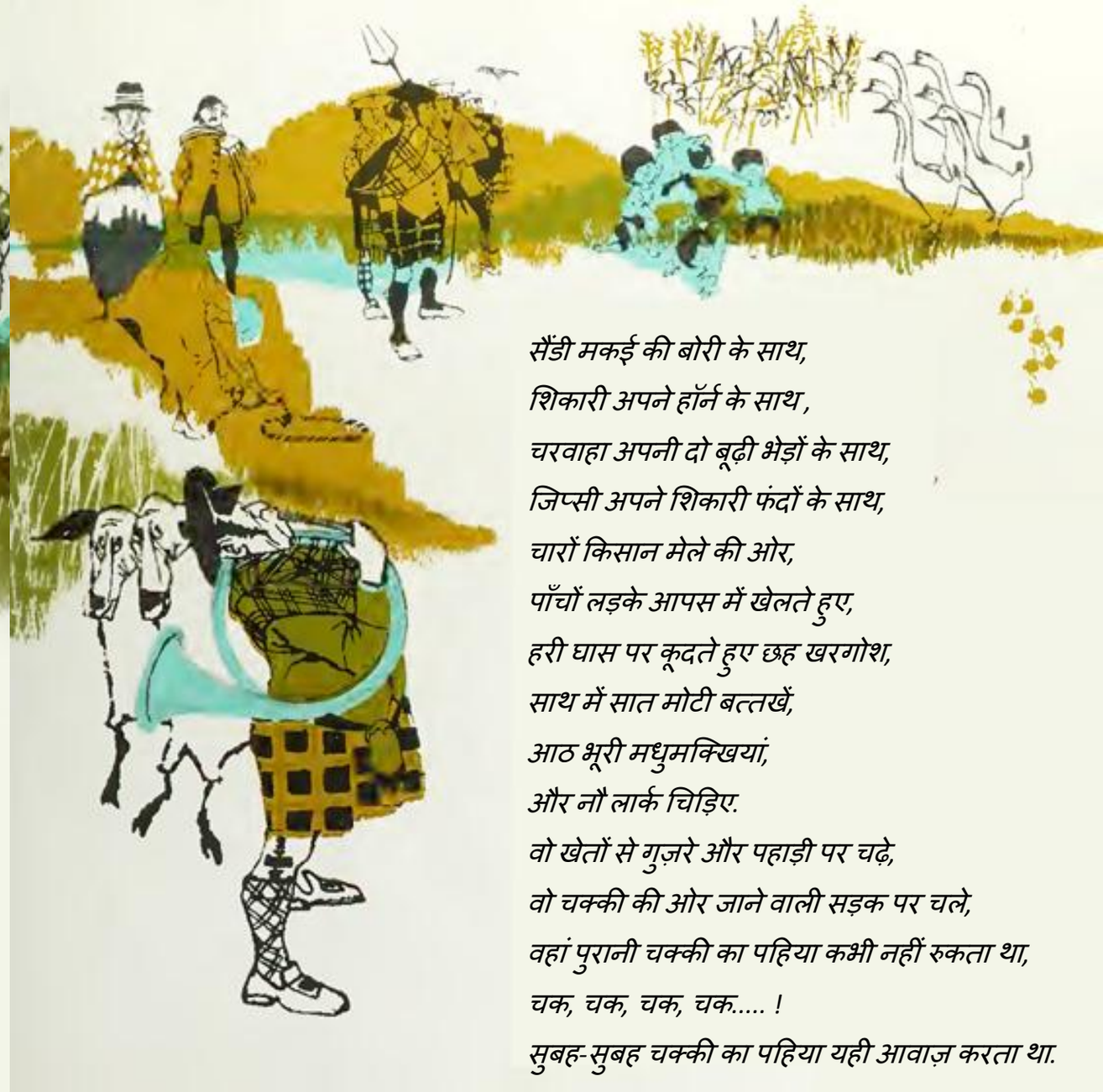

सैंडी मकई की बोरी के साथ,
शिकारी अपने हॉर्न के साथ ,
चरवाहा अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,
जिप्सी अपने शिकारी फंदों के साथ,
चारों किसान मेले की ओर,
पाँचों लड़के आपस में खेलते हुए,
हरी घास पर कूदते हुए छह खरगोश,
साथ में सात मोटी बत्तखें,
आठ भूरी मधुमक्खियां,
और नौ लार्क चिड़िए.
वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,
वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया यही आवाज़ करता था.

फिर उनकी भेंट हुई दस हंसमुख लड़कियों के साथ.

"तुम कहाँ जा रहे हो, सैंडी?" हंसमुख लड़कियों ने पूछा.

सैंडी ने कहा, "मैं चक्की तक जा रहा हूं."

"हम भी उसी रास्ते जा रहे हैं, सैंडी," दस हंसमुख लड़कियों ने कहा.

फिर वो हंसमुख लड़कियां भी उनके साथ चलने लगीं.

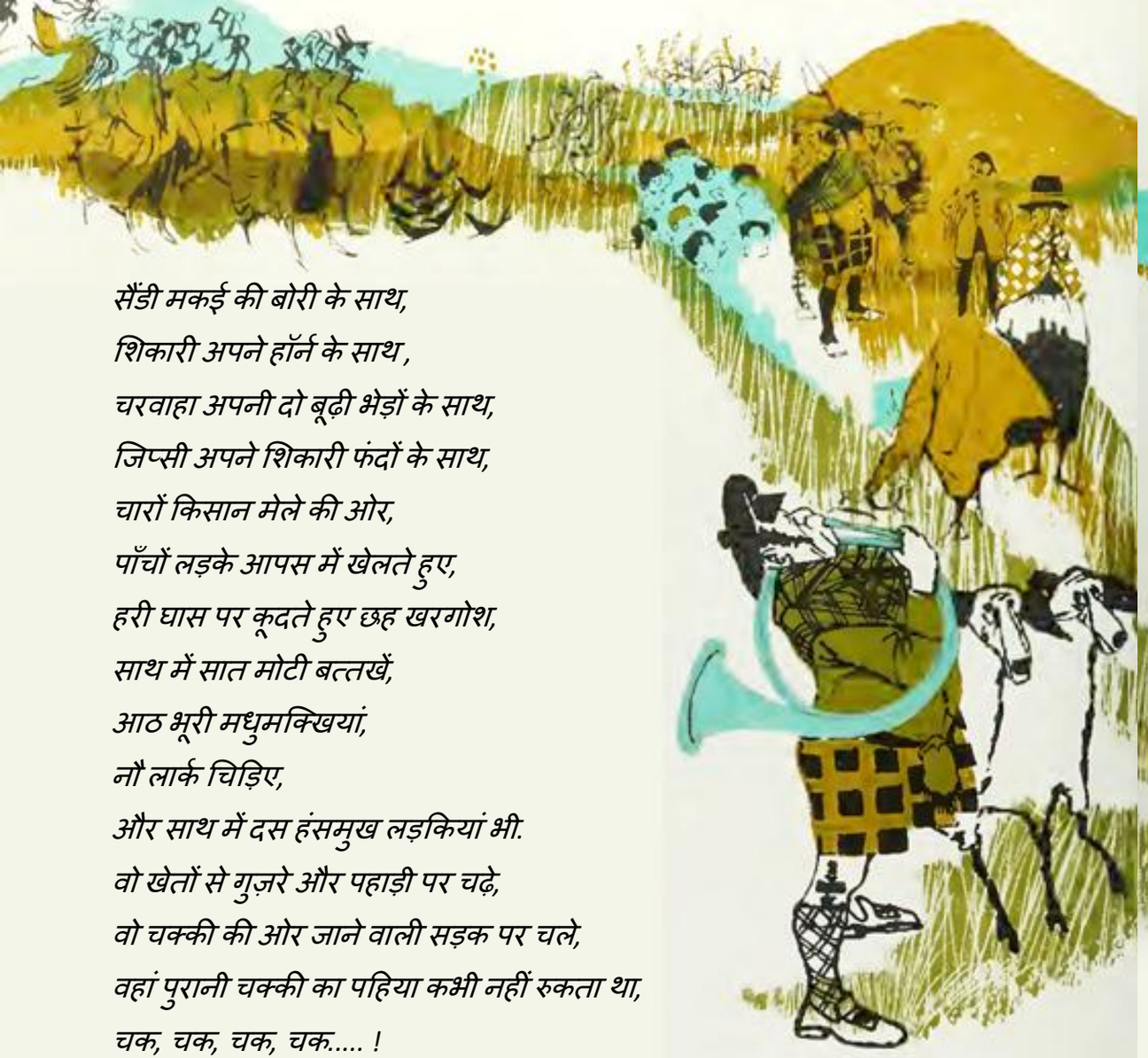

सैंडी मकई की बोरी के साथ,
शिकारी अपने हॉर्न के साथ ,
चरवाहा अपनी दो बूढ़ी भेड़ों के साथ,
जिप्सी अपने शिकारी फंदों के साथ,
चारों किसान मेले की ओर,
पाँचों लड़के आपस में खेलते हुए,
हरी घास पर कूदते हुए छह खरगोश,
साथ में सात मोटी बत्तखें,
आठ भूरी मधुमक्खियां,
नौ लार्क चिड़िए,
और साथ में दस हंसमुख लड़कियां भी.
वो खेतों से गुज़रे और पहाड़ी पर चढ़े,
वो चक्की की ओर जाने वाली सड़क पर चले,
वहां पुरानी चक्की का पहिया कभी नहीं रुकता था,
चक, चक, चक, चक..... !
सुबह-सुबह चक्की का पहिया यही आवाज़ करता था.

"मुझे बस यहाँ तक ही जाना है," सैंडी ने कहा.

फिर सबने एक-दूसरे से "शुभ दिन," कहा.

उसके बाद बाकी कारवां अपने-अपने रास्ते चला गया.

सैंडी चक्की के अंदर गया और उसने चक्कीवाले को मकई का बोरा दिया.

फिर चक्कीवाले ने मकई को पीस कर आटा बनाया.

और यह सब एक ही सुबह को हुआ.

समाप्त